JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान समय में समाज सेवी मिनीमाता जी का शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन में योगदान

डॉ0 रश्मि शुक्ला
सहायक प्राध्यापक शिक्षा
कमला नेहरू महाविद्यालय, कोरबा

डॉ0 अब्दुल सतार
विभाध्यक्ष (शिक्षा)
कमला नेहरू महाविद्यालय, कोरबा

कु. सपना ठाकुर
एम.ए. (शिक्षा)
कमला नेहरू महाविद्यालय, कोरबा

01. **संक्षेपिकाः–** ''शिक्षा' ज्ञान उचित आचरण तकनीकी दक्षता, विद्या, आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं।

शिक्षा में ज्ञान उचित आचरण और तकनीकी दक्षता शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट हैं। इस प्रकार यह कौशलों व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक नैतिक और सौंदर्य विषयक के उत्कर्ष पर केन्द्रित है। ''शिक्षा' समाज एक पीढ़ी द्वारा अपने से निली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है जो व्यक्ति विशेष को समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है।

विद्यार्थी का शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है।

बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है। जब वह समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

स्वामी विवेकानंद के अुनसार– मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।

भूमिका– ''शिक्षा'' व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व का विकास करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के शिक्ष धातु में 'अ' प्रत्यय से बना है। शिक्षा का अर्थ ''सीखना और सीखाना''

''शिक्षा शब्द का अर्थ हुआ सीखने सीखाने की प्रक्रिया

समाज सेविका मिनीमाता जी एक परिचयः–

मिनी माता जी का जन्म 15 मार्च 1913 को असम के नौगांव में हुआ था इनका मूल नाम मीनाक्षी एवं माता जी का नाम मती बाई था।

मिनी माता जी का बचपन गरीबी में गुजरा मिनी माता जी का विवाह छत्तीसगढ़ के सतनामी पंथ के संत गुरूघासी दास के पुत्र गुरू अगम दास जी के संग हुआ था। विवाहोपरांत पति के साथ राष्ट्रीय आंदोलन दलितोत्थान एवं समाज सुधार गतिविधियों में भागीदारी की।

वर्ष 1952 में पति की मृत्यु के बाद रिक्त संसदीय क्षेत्र सारंगढ़ के उप चुनाव में विजयी होकर छत्तीसगढ़ क्षेत्र की चुनाव में विजयी होकर छत्तीसगढ़ क्षेत्र की प्रथम महिला सांसद बनी वर्ष 1952 से 1972 तक लोक सभा में सारंगढ़, जांजगीर तथा महासमुंद क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। छत्तीसगढ़ सांस्कृतिक मंडल की मिनीमाता जी अध्यक्ष रहीं। छत्तीसगढ़ कल्याण मजदूर संगठन जो भिलाई में स्थित है। उसकी संस्थापक व अध्यक्ष रहीं।

इनका निधन 11 अगस्त 1972 को भोपाल से दिल्ली जाते हुए विमान हादसे में हुआ। समाज सेविका मिनीमाता जी की पहचान अनेक नेक कार्यों के कारण पूरे भारत वर्ष में हुई।

समाज सेविका मिनीमाता जी द्वारा सामाजिक एवं महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए किये गये कार्य

1. **महिला के शिक्षा के लिए किये गये कार्यः–** मिनीमाता जी ने महिलाओं की शिक्षा को लेकर अनेक अभियान चलाये जिससे महिलाओं को समाज में उनका हक मिल सके। विशेषकर छत्तीसगढ़ एवं असम आदि राज्यों में।

2. **सामाजिक उत्थान के कार्यः–** मिनीमाता जी ने सामाजिक उत्थान के लिए विशेष अभियान चलाये। विशेषकर सामाजिक कुरितियों को दूर करने का प्रयास किया जो उनके कद को सामाजिक क्षेत्रों में और बढ़ा देता है।

3. **ग्रामीण व क्षेत्रीय विकासः–** उन्होने ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, बिजली, पानी शाला भवन के निर्माण में विशेष योगदान दिया। आवागमन के साधनों पर बल दिया। उनके अमूल्य योगदान से उनकी ख्याती जन–जन तक बढ़ती चली गई।

4. **बाल विवाह व दहेज प्रथा का विरोधः–** शिक्षा के माध्यम से उन्होने दहेज प्रथा व बाल विवाह का विरोध किया। उन्होने बालिका व स्त्री शिक्षा पर बल दिया। इसके लिए उन्होने अनेक स्कूलों का निर्माण करवाया।

5. **शारीरिक रूप से विकलांग व गरीब बच्चों की शिक्षा पर बलः–** मिनीमाता जी के द्वारा शारीरिक रूप से विकलांग और गरीब बच्चों की शिक्षा व विकास में योगदान सराहनीय रहा।

6. **महिलाओं व हरिजन छात्रावास निर्माण अभियानः–** छात्रावास का निर्माण चूंकि उस समय हरिजन छात्रों की पढ़ाई के लिए दूसरे जगह जाने रहने के लिए आश्रय कोई देने के लिए तैयार नहीं होता था। इस बुराई को कम करने के लिए उन्होने हरिजन छात्रावास के निर्माण पर जोर दिया। समाज में व्याप्त अस्पृश्यता नाम राक्षस से लड़ने में उन्होने अपना योगदान दिया।

मिनी से मिनीमाता बनने का सफरः– गुरू अगम दासजी छत्तीसगढ़ के एक प्रसिद्ध व्यक्ति थे। जिनका सतनाम समाज में काफी प्रभाव था। जिसके कारण उनके घर में तब के स्वतंत्रता सेनानियों का जमावड़ा लगा रहता था और यह काफी सुरक्षित भी था। इन स्वतंत्रता सेनानियों का प्रभाव मिनीमाता जी के स्वभाव में भी दिखने लगा था।इन्ही सब कारणो से उनके मन में भी समाज और देश के लिए कुछ करने की भावना बलवती होती गई। जैसे ही लगता है सब कुछ अच्छा चल रहा है। विधि का विधान कुछ और ही सोच कर बैठा होता है। 1954 में गुरू अगम दास जी की मृत्यु के बाद कर्तव्य का सारा बोझ मिनाक्षी देवी के कंधो पर आ गया था। क्योंकि उस समय उनके बेटे विजय कुमार की उम्र काफी कम थी जो इस कर्तव्यों को उठाने के लायक नहीं हुये थे। मीनाक्षी देवी अपने पारिवारिक दायित्वों का अच्छे से निर्वहन करने के साथ–साथ सामाजिक दायित्व का भी काफी अच्छे से निर्वहन कर रही थी जिसके कारण उनकी प्रसिद्धी काफी बढ़ गयी थी। वर्ष 1955 की उप चुनाव में संयुक्त संसदीय क्षेत्र रायपुर, बिलासपुर और दूर्ग में अपना परचम लहराकर छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला सांसद होने का गौरव उन्हे प्राप्त हुआ।

मिनीमाता जी का राजनैतिक सफरः–

- 1955 उपचुनाव जीतकर सर्वप्रथम महिला सांसद बनने का गौरव प्राप्त हुआ।
- 1957 में पुनः संयुक्त संसदीय क्षेत्र रायपु, बिलासपुर और दुर्ग से जीतकर सांसद बनी।
- 1962 में बलौदा बाजार क्षेत्र से 52 फीसदी ज्यादा मतों से जीतकर दिल्ली में छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व की।
- 1967 में जानकारी संसदीय क्षेत्र से पिछले बार से ज्यादा मत प्रतिशत के साथ जीतकर संसद में अपना दमदार प्रतिनिधित्व का लोहा मनवाई।
- मिनीमाता ने 1971 के चुनाव में पुनः जांजगीर क्षेत्र से चुनाव जीतकर 5 बार चुनाव जीतने का तमगा हासिल किया।

मिनीमाता जी की राजनीतिक उपलब्धियांः– वैसे तो मिनीमाता जी ने ऐसे अनेक कार्य किये हैं जो उन्हे मीनाक्षी देवी से मिनीमाता का दर्जा प्रदान करती है।

इनमें से कुछ उपलब्धियां निम्नलिखित हैः–

1. 1955 में अपना स्वयं के प्रयास पर अस्पृश्यता बिल ससंद में पास करवाया।
2. 1967 में एक विशाल रैली इनके नेतृत्व में निकाली गई। जिसमें भिलाई स्टील प्लांट द्वारा मजदूरों की छटनी के विरोध में चलाया गया। इस रैली के फलस्वरूप ही हजारों मजदूरों को काम से नहीं निकाला गया। हजारों मजदूरों की नौकरी जाने से बच गई।
3. 1968 में जातिगत भेदभाव के कारण होने वाले लड़ाईयों के लिए भी आवाज बुलंद की। जिसके फलस्वरूप ही बहुत से जगहों पर जातिगत भेदभाव कम करने में बड़ी सफलता हासिल हुई।
4. मिनीमाता जी राज्य कांग्रेस समिति के महासचिव के पद पर भी रहीं।
5. गुरू घासीदास सेवा संघ और हरिजन एजुकेशन सोसायटी के अध्यक्ष के पद पर भी रहीं।

   इन्होने स्टेट डिप्रेस्ड लींग की उपाध्यक्ष के पद को भी सुशोभित किया।

मिनीमाता जी ने सामाजिक कल्याण बोर्ड और जिला कांग्रेस समिति के सदस्य के रूप में भी कार्य किया।

निष्कर्षः–

1. समाज सेविका मिनीमाता जी द्वारा किये गये सामाजिक उत्थान के काम और उनके ममतामयी स्वभाव के कारण उन्होने भारत एवं विश्वभर में उन्हे जाता है।
2. छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा छत्तीसगढ़ में महिला कल्याण के लिए काम करने वाली महिलाओं व समूहों को प्रतिवर्ष मिनीमाता सम्मान से सम्मानित किया जाता है।
3. मिनीमाता जी के द्वारा देश के लिए किये गये सामाजिक उत्थान व शैक्षणिक उत्थान दलित उत्थान के लिए किये गये कार्यों के कारण उनके नाम से रायपुर बस स्टैण्ड का नाम रखा गया। साथ ही उनके स्मृति को बनाये रखने के लिए अनेक विद्यालयों व महाविद्यालयों का नाम भी इन्ही के नाम से रखा गया है। हसदेव बांगो परियोजना का नाम भी मिनीमाता बांगो परियोजना रखा गया है। छत्तीसगढ़ के विधान सभा का नाम भी ममतामयी माता जी मिनीमाता के नाम पर ही रखा गया है।
4. मिनीमाता जी के द्वारा दलितों के उत्थान के लिए सराहनीय भूमिका निभायी गई। उन्होने दलितों को समाज में उन्हे उचित स्थान दिलवाया।
5. उनके द्वारा मजदूर आंदोलन चलाया गया। विभिन्न रैली का आयोजन कर भिलाई स्टील प्लांट के हजारों मजदूरों को बेरोजगार होने से बचाया गया।

मिनीमाता जी का संघर्ष भरा रहा। उनका सारा जीवन भारत की जनता को समर्पित रहा। सामाजिक उत्थान दलितों के शोषण को दूर करने का कार्य बालिका व स्त्री शिक्षा सामाजिक कुरितियों को दूर करने मजदूरों के उत्थान आदि कार्यों में इनका सराहनीय योगदान रहा। समाज में व्याप्त हुआ छुत गरीबी अशिक्षा तथा पिछड़ापन दूर करने के लिए मिनीमाता जी ने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

संदर्भ ग्रंथ

1- www.cgnewshindi.in

2. https//koyapunemgond wana.com

3. https//iamchhattisgarh.in

4. नवभारत

5. हरिभूमि

6. कोरबा नई दुनिया न्यूज।